ध्येय पथ

मार्च 2024

मासिक ई-पत्रिका

सम्पादक

श्रीमती पुष्पा निषाद

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र

महाराणा प्रताप महाविद्याल, जंगल धूसड़

गोरखपुर

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (उद्घाटन सत्र)

01,02,03 मार्च, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा कला संकाय महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में "भारत–नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक" विषयक तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 01 मार्च को हुआ। कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में उत्तर पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत नेपाल के माननीय उपकुलपति प्रो. नन्द बहादुर सिंह उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार काठमाण्डू, नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री मा. देवेन्द्र राज कण्डेल जी भी मौजूद रहे। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर, रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाण्डू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) भागवत ढकाल भी समारोह में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के माननीय कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने की। इस अवसर पर कार्यक्रम की प्रस्ताविकी व अतिथियों का स्वागत महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने तथा कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

उद्घाटन समारोह के तत्काल बाद प्रथम तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने की। विषय विशेषज्ञ के रूप में पूर्व गृह राज्यमंत्री, नेपाल सरकार काठमाण्डू, नेपाल के मा. देवेन्द्र राज कण्डेल, पूर्व उप सभामुख, प्रतिनिधि सभा एवं केन्द्रीय सदस्य नेपाल कांग्रेस नेपाल की श्रीमती पुष्पा भुषाल, विधायक, कोसी प्रदेश एवं केन्द्रीय सदस्य नेपाल के माननीय भीम पराजुली, लुम्बिनी विश्वविद्यालय, लुम्बिनी नेपाल पी.एच.डी. पाठ्यक्रम समन्वयक प्रो. नरेन्द्र कुमार श्रेष्ठ तथा लुम्बिनी विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल सहयुक्त आचार्य डॉ. सागर न्यौपाने जी उपस्थित रहे। सत्र का संचालन डॉ. अवन्तिका पाठक तथा प्रतिवेदन डॉ. वेंकट रमन ने किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र

प्रथम तकनीकी सत्र के समानान्तर ही द्वितीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कला संकाय की संकायाध्यक्ष प्रो. कीर्ति पाण्डेय ने किया। सह–अध्यक्ष के रूप में बाल्मिकी विद्यापीठ काठमांडू नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल जी उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के से.नि. आचार्य प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, लुम्बिनी विश्वविद्यालय, लुम्बिनी नेपाल सहायक आचार्य डॉ. शिवाकान्त दूबे, तथा चन्द्रकांती रमावती देवी आर्य महिला पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर की राजनीतिशास्त्र विभाग की सहायक आचार्य डॉ. प्रीति त्रिपाठी जी उपस्थित रही। सत्र का संचालन डॉ. अर्चना गुप्ता तथा प्रतिवदेन श्रीमती पुष्पा निषाद ने किया। इस सत्र में सुश्री जूनी श्रीवास्तव, श्री विवेक विश्वकर्मा व डॉ. मनीषा सिंह सहित 08 शोधार्थियों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

तृतीय तकनीकी सत्र

संगोष्ठी के दूसरे दिन अर्थात 02 मार्च को तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र नेपाल के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल जी ने की। सह–अध्यक्ष के रूप में त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर काठमाण्डु नेपाल के से.नि. आचार्य प्रो. राजाराम सुवेदी जी उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में नेपाल के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री नवीन बंधु पहाड़ी तथा गणेश राय पी.जी कॉलेज डोभी, जौनपुर इतिहास विभाग सहायक आचार्य, डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सत्र का संचालन डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय तथा प्रतिवेदन श्री अनूप पाण्डेय ने किया। इस सत्र में डॉ. सुनील कुमार, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, डॉ. संदीप श्रीवास्तव व श्री अजीत कुमार ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

तृतीय तकनीकी सत्र के समानान्तर ही चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. राजवन्त राव ने की। सह अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध लेखक, स्तम्भकार, राजनीतिक विश्लेषक एवं नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री के सलाहकार श्रीकृष्ण अनिरूद्ध गौतम जी रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. पद्मजा सिंह व स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शचीन्द्र मोहन ने उपस्थिति दर्ज कराई। सत्र का संचालन डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह व प्रतिवेदन श्री रमाकान्त दूबे ने किया। इस सत्र में डॉ. अमिता अग्रवाल, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. धमेन्द्र मौर्य व सुश्री पूजा ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

पंचम तकनीकी सत्र

संगोष्ठी के दूसरे दिन पंचम तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो. सुबोध शुक्ला ने की। सह अध्यक्ष के रूप में महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ शोध पीठ, गोरखपुर के उपनिदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र जी उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर समाजशास्त्र विभाग सहायक आचार्य श्री प्रकाश प्रियदर्शी व महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ गोरखपुर की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सत्र का संचालन श्री विनय कुमार सिंह ने तथा प्रतिवेदन श्री नन्दन शर्मा ने किया। इस सत्र में सुश्री विभा कुमारी, श्री मयंक, श्री प्रवीण, सुश्री नम्रता व डॉ. वन्दना सोनकर ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

समूह परिचर्चा सत्र

संगोष्ठी के तीसरे दिन 03 मार्च को समूह परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया इस मुक्त समूह परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता नेपाल के प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री नारायण प्रसाद ढकाल जी ने की। सह अध्यक्ष के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के रक्षा अध्ययन विभाग पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा जी उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर इतिहास विभाग से.नि. आचार्य प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, बेलझुण्डी, दांड, नेपाल के कार्यकारी निदेशक प्रो. (डॉ.) सुधन कुमार पौडेल, त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू, नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. सुबोध शुक्ला, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर राजनीतिशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अमित कुमार उपाध्याय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. पद्मजा सिंह व गणेश राय पी.जी कॉलेज डोभी जौनपुर इतिहास विभाग, सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी जी उपस्थित रहे।इस समूह परिचच्र सत्र में बड़ी संख्या में शोधार्थी, प्राध्यापकगण एवं महाविद्यालय के विद्यार्थी सम्मिलित हुए तथा उपस्थित विषय विशेषज्ञों एवं विद्यार्थियों के बीच द्विपक्षीय संवाद हुआ।

समापन समारोह

समूह परिचर्चा सत्र के तुरन्त बाद तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर की माननीय कुलपति प्रो. पूनम टण्डन ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश के माननीय कुलपति प्रो. श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी जी उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, बेलझुण्डी, दांङ, नेपाल कार्यकारी निदेशक प्रो. (डॉ.) सुधन कुमार पौडेल, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. सुबोध शुक्ला तथ प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद,

काठमाण्डू, नेपाल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री नारायण प्रसाद ढकाल भी उपस्थित रहे। इसी क्रम में तीन दिनों तक चलने वाली इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का सम्पूर्ण प्रतिवेदन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर राजनीतिशास्त्र विभाग सहायक आचार्य डॉ. अमित कुमार उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. पद्मजा सिंह ने किया। जबकि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने उपस्थित समस्त अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

तीन दिवसीय आर्ट एण्ड क्राफ्ट कार्यशाला

05 मार्च को महाविद्यालय के बी.एड्. विभाग के तत्वावधान में तीन दिवसीय आर्ट एण्ड क्राफ्ट कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की प्रशिक्षिका ताहिदा खातून एवं सोनम कुमारी ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया। कार्यक्रम का संयोजन बी.एड्. विभाग प्रभारी श्रीमती शिप्रा सिंह ने किया।

तीन दिवसीय आर्ट एण्ड क्राफ्ट कार्यशाला

06 मार्च को महाविद्यालय के बी.एड्. विभाग के तत्वावधान में तीन दिवसीय आर्ट एण्ड क्राफ्ट कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की प्रशिक्षिका ताहिदा खातून एवं सोनम कुमारी ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया। कार्यक्रम का संयोजन बी.एड्. विभाग प्रभारी श्रीमती शिप्रा सिंह ने किया।

तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन कार्यक्रम

07 मार्च को महाविद्यालय के बी.एड्. विभाग के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय आर्ट एण्ड क्राफ्ट कार्यशाला का समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रशिक्षक के रूप में वाहिदा खातून एवं सोनल कुमारी ने प्रशिक्षित कर विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान किया कार्यशाला के समापन अवसर पर बी. एड्. विभाग के शिक्षक श्री शैलेन्द्र ने प्रशिक्षकों का आभार ज्ञापित किया।

एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

09 मार्च को महाविद्यालय के बी.एड्. विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय ''अपशिष्ट सामग्री से शिल्पकला'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षक के रूप में सोनम कुमारी ने विद्यार्थियों को अपशिष्ट पदार्थो से विभिन्न प्रकार के शिल्प तथा कलाकृतियाँ बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम का संयोजन बी.एड्. विभाग प्रभारी श्रीमती शिप्रा सिंह ने किया।

शोध व्याख्यान प्रतियोगिता

19 मार्च को महाविद्यालय में इतिहास विभाग द्वारा शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय सेमेस्ट के कुल 13 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान क्रमशः श्री मारूति नन्दन मिश्रा, सुश्री ज्योति प्रजापति तथा श्री राहुल कुमार ने प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल के रूप में डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. दीपशिखा नागवंशी तथा सुश्री दीति गुप्ता ने सक्रिय सहभाग किया। प्रतियोगिता का संयोजन अनूप कुमार पाण्डेय ने किया।

मतदाता साक्षरता क्लब

20 मार्च को महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में ''मतदाता साक्षरता क्लब'' के अन्तर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में महाविद्यालय के उप–प्राचार्य डॉ. विजय कुमार चौधरी ने उपस्थित विद्यार्थियों को मतदान के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी, मतदाता जागरूकता डॉ. अखिलेश कुमार गुप्त ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के सभी स्वयंसेवक/स्वयंसेविकाएं उपस्थित रहीं।

विशिष्ट व्याख्यान

21 मार्च को महाविद्यालय में भूगोल विभाग के तत्वावधान में विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में वनस्पति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अखिलेश कुमार गुप्ता ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. शालू श्रीवास्तव ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. नीलम गुप्ता ने किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

21 मार्च को महाविद्यालय के बी.एड्. विभाग के तत्वावधान में आनलाइन शिक्षा : वरदान या अभिशाप विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 28 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। वाद–विवाद प्रतियोगिता में पक्ष में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान–क्रमशः बी. एड्. द्वितीय सेमेस्टर के राकेश कुमार, अखिल एवं किशन ने तथा विपक्ष में प्रथम स्थान– शिवम जायसवाल, द्वितीय स्थान–संयुक्त रूप से कीर्तिराय एवं विवेक तथा तृतीय स्थान–संयुक्त रूप से

जयदीप मुखर्जी एवं आकाश गुप्ता ने प्राप्त किया। निर्णायक मण्डल में बी. एड्. विभाग के सहायक आचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह, श्रीमती पुष्पा निषाद एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने सक्रिय सहभाग किया।

रक्षा प्रदर्शनी

22 मार्च को महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा रक्षा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि के रूप में दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के उप–प्राचार्य डॉ. विजय कुमार चौधरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक विश्वकर्मा ने तथा आभार ज्ञापन श्री रमाकान्त दूबे ने किया। प्रदर्शनी में सर्वोत्तम मॉडल प्रस्तुत करने के लिए बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर के गिरिजेश राय को प्रथम, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की शालू मिश्रा को द्वितीय तथा बी.एस–सी. चतुर्थ सेमेस्टर की प्रतिभा गुप्ता को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

विशिष्ट व्याख्यान

23 मार्च को महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा ''बाल अधिकार और उनका संरक्षण'' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप बेंच ऑफ मजिस्ट्रेट, मेम्बर चाइल्ड वेलफेयर कमेटी महाराजगंज के डॉ. मनीष कुमार पाण्डेय ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय ने व संचालन रितेन्द्रनाथ पाण्डेय ने किया।

विशिष्ट व्याख्यान

23 मार्च को महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा शहीदी दिवस के अवसर पर ''शहीद भगत सिंह और उनका अविनाशी इंकलाब'' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय ने अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय तथा संचालन श्री अभिनव त्रिपाठी ने किया।

समाचार पत्रो में प्रकाशित महाविद्यालय के विविध कार्यक्रम

4 दैनिक जागरण गोरखपुर, 1 मार्च, 2024

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आज से नेपाल मैत्री संबंधों पर होगा मंथन

जासं, गोरखपुर : भारत और नेपाल के अंतरसंबंधों पर मंथन के लिए महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में शुक्रवार से अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होने जा रहा है। 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ शुक्रवार को सुबह 10 बजे से होगा। नेपाल के दो दर्जन से अधिक विद्वतजन गुरुवार को ही गोरखपुर पहुंच चुके हैं।

संगोष्ठी के विषय में जानकारी देते अयोजन के संयोजकद्वय ने डा. पद्मजा सिंह और डा.सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि कालेज प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव की मार्गदर्शन में संगोष्ठी की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। नेपाल के दो दर्जन से अधिक विद्वान आ चुके हैं। कई और विद्वानों के आने की उम्मीद है। करीब पचास विद्वान आनलाइन जुड़कर भारतीय विद्वतजन के साथ उन आयामों पर चर्चा करेंगे, जिससे भारत और नेपाल के मैत्रीपूर्ण संबंधों को नई ऊंचाई दी जा सके। उन्होंने यह भी बताया कि संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, नेपाल के कुलपति प्रो.सुबरन लाल बज्राचार्य करेंगे। सारस्वत अतिथि के रूप में मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह, मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल और विशिष्ट अतिथि के रूप में वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल की सहभागिता रहेगी। उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा का होगा। पहले दिन दो तकनीकी सत्र होंगे जबकि तीसरे दिन तीन तकनीकी सत्रों के अलावा प्रतिभागियों को गोरखनाथ मंदिर का भ्रमण कराया जाएगा। समापन सत्र की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन करेंगी। मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश के कुलपति प्रो.श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, दांग, नेपाल के कार्यकारी निदेशक प्रो.सुधन कुमार पौडेल, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. सुबोध शुक्ल, प्राज्ञीक विद्यार्थी परिषद, काठमांडू, नेपाल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री नारायण प्रसाद ढकाल मौजूद रहेंगे।

अमर उजाला

amarujala.com

गोरखपुर | शुक्रवार, 1 मार्च 2024 11

भारत-नेपाल मैत्री संबंधों पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आज से

गोरखपुर। ''भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक'' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ शुक्रवार को सुबह 10 बजे से महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में होगा।

तीन मार्च तक चलने वाले इस आयोजन में शामिल होने के लिए बृहस्पतिवार को नेपाल के 24 विद्वतजन पहुंच गए हैं। सेमिनार महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है।

इस बारे में जानकारी देते हुए आयोजन के संयोजक डॉ. पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव की देखरेख में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

बताया कि सेमिनार में एक मार्च को उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य करेंगे। संवाद

गोरखपुर। शुक्रवार • 1 मार्च • 2024 '7' सहारा

अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन आज

गोरखपुर (एसएनबी)। भारत नेपाल मैत्री संबंधों पर तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में शुक्रवार को पूर्वाह्न 10 बजे से होगा। 03 मार्च तक चलने वाले इस आयोजन में शामिल होने के लिए गुरुवार को नेपाल के 24 विद्वतजन गोरखपुर पहुंच गए हैं।

यह सेमिनार महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है। 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्राः अतीत से वर्तमान तक' विषयक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के बारे में जानकारी देते हुए आयोजन के संयोजकद्वय डा. पद्मजा सिंह और डा. सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव की देखरेख में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में अपना अनुभव और शोध निष्कर्ष साझा करने के लिए नेपाल के 24 विद्वान गुरुवार तक यहां पहुंच चुके हैं।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में 3 मार्च तक चलेगा आयोजन

शुक्रवार को उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुवरन लाल बज्राचार्य करेंगे। जबकि सारस्वत अतिथि के रूप में मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय सुर्खेत नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह, मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल और विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ काठमांडू नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल की सहभागिता रहेगी।

हिन्दुस्तान
गोरखपुर, शुक्रवार, 1 मार्च 2024 10

एमपी महाविद्यालय जंगल धूसण मे कार्यक्रम की चल रही तैयारियां। • हिन्दुस्तान

भारत-नेपाल मैत्री संबंधों पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आज से

- एमपी महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में 3 मार्च तक चलेगा सेमिनार
- सेमिनार में शामिल होने के लिए नेपाल के 24 विद्वतजन पहुंचे गोरखपुर

गोरखपुर, निज संवाददाता। महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसम्बंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ शुक्रवार को सुबह 10 बजे होगा। तीन मार्च तक चलने वाले इस आयोजन में शामिल होने के लिए नेपाल के 24 विद्वतजन गोरखपुर पहुंच गए हैं।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहे इस सेमिनार की तैयारियां प्राचार्य डॉ प्रदीप कुमार राव की देखरेख में पूरी कर ली गई है। संयोजक डॉ पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध मिश्र ने बताया कि सेमिनार के उदघाटन सत्र की अध्यक्षता लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, नेपाल के कुलपति प्रो. सुवरन लाल बज्राचार्य करेंगे।

सारस्वत अतिथि के रूप में मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल और विशिष्ट अतिथि के रूप में वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल की सहभागिता रहेगी। बीज वक्तव्य गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं सामाजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा का होगा।

THE TIMES OF INDIA
SATURDAY, MARCH 2, 2024

'Common DNA of religion, culture binds India, Nepal'

TIMES NEWS NETWORK

Gorakhpur: A three-day international seminar titled "The Development Journey of India-Nepal Cultural Relations: From Past to Present" kicked-off at MP PG College in Jungle Dhusar on Friday. During the inaugural session, prominent speakers spoke on the deep-rooted cultural ties that bind India and Nepal.

Speaking at the event, former Nepalese home minister Devendra Raj Kandel highlighted the shared spiritual and cultural heritage as the core thread connecting the two nations. He cited Lord Ram, Mahatma Buddha, and Lord Shiva's incarnation Mahayogi Guru Gorakhnath as enduring symbols of this unity. He also highlighted the importance of prioritising cultural and religious ties over political considerations.

Kandel also cited the recent Pran Pratishtha ceremony in Ayodhya, Lord Ram's birthplace, and the enthusiastic celebrations it garnered in Nepal. This, he argued, exemplified the shared cultural tapestry. He urged both governments to adopt practical measures -- like the proposed operation of tourist buses from Gorakhpur to Nepal -- to strengthen these bonds.

During the inaugural session, prominent speakers spoke on the deep-rooted cultural ties that bind India and Nepal

3-DAY SEMINAR KICKS OFF

Meanwhile, Subarn Lal Bajracharya, vice-chancellor of Lumbini Buddhist University, Nepal, underscored the interdependence of India and Nepal. He attributed this bond to the shared heritage of "Hindutva" and stressed the importance of respecting and promoting it for stronger bilateral relations. Nand Bahadur Singh, vice-chancellor of Madhya Paschim University, Nepal, echoed similar sentiments. He added that India and Nepal share a common "DNA" in terms of religion, culture, language, and civilisation. He also pointed out India's role as an elder brother in protecting Nepal and called for the eradication of cross-border counterfeit currency circulation.

In a similar vein, Bhagwat Dhakal, principal of Valmiki Vidyapeeth, Kathmandu, Nepal, reiterated the cultural affinity between the two nations. He pointed to the shared heritage reflected in their scriptures and literature. He advocated for regular cultural programs to further enhance the harmony between India and Nepal. Welcoming the guests, MP PG College Principal Pradeep Rao underscored the significance of historic figures like Gorakhnath and Matsyendranath in symbolising the strong India-Nepal relationship. The seminar explored the historical and contemporary aspects of India-Nepal cultural relations, highlighting their shared heritage as a cornerstone for fostering closer ties and mutual cooperation.

हिन्दुस्तान गोरखपुर, शनिवार, 2 मार्च 2024 05

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में सांस्कृतिक अंतर्संबंधों पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का हुआ शुभारंभ

राम, बुद्ध व गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के सूत्र

गोरखपुर, निज संवाददाता। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के अक्षुण्ण मूल सूत्र हैं। यह कहना है नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का।

देवेंद्र राज कंडेल शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार में कंडेल ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़ने भी पड़े तो छोड़ देना चाहिए। 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद श्रीरामलला की जन्मभूमि अयोध्या में बने भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के रूप में मनाया गया। भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत नेपाल के आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। आज भी बिना पासपोर्ट और वीजा के लोग भारत और नेपाल की सीमाओं को पार करते हैं। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है। उन्होंने नेपाल पर गुरु गोरखनाथ के प्रभाव की चर्चा करते हुए बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। साथ ही कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हम लोगों की वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी।

स्मारिका का विमोचन करते देवेन्द्र राज कंडेल, प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य व अन्य।

एमपीपीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में मौजूद अतिथि व छात्र-छात्राएं।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध हैं। हिंदुत्व का सम्मान करने व हिंदुत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में धनिष्ठता और मधुरता आएगी। सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है। इसलिए दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं।

कार्यक्रम में ये लोग रहे मौजूद : इस अवसर पर आयोजन के संयोजकद्वय डॉ. पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवन्त गुप्ता, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. हर्षवर्धन, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. नीरज सिंह, डॉ. नीलांबुज, नेपाल से आए विद्वतजन प्रो. नरेंद्र कुमार श्रेष्ठ, डॉ. सागर न्यौपाने, भीम पराजुली, प्रो. सुधन कुमार पौडेल, प्रो. राजाराम सुवेदी, श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गौतम, प्रो. सुबोध शुक्ला, नारायण प्रसाद ढकाल, राजन काकी, बाजिरा, बाल बहादुर पांडेय, डॉ. शिवकांत दूबे, कृष्ण हुमागाई, सुभेन्द्र यादव व विनय मिश्र समेत दोनों देशों के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र : प्रो. ढकाल

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र है। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी। बीज वक्तव्य देते हुए डीडीयू के रक्षा एवं स्वातंत्रिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता को दर्शाता है। महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए कहा कि भारत और नेपाल दोनों देशों का मूल एक है। गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ से जो रिश्ता है उससे हम भाई हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। अतिथियों ने भारत नेपाल के अंतर्संबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया।

गोरखपुर। शनिवार • 2 मार्च • 2024 7 सहारा

राम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र

- भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों पर त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ
- दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध : प्रो.सुबरन लाल
- दोनों देश के नागरिकों का डीएनए एक : प्रो.नंद बहादुर

गोरखपुर (एसएनबी)। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के अक्षुण्ण मूल सूत्र हैं।

यह कहना है नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का। श्री कंडेल शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगलधूसड़ में आयोजित भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा: अतीत से वर्तमान तक विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार में श्री कंडेल ने कहा कि भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत नेपाल के आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध हैं। वास्तव में सांस्कृतिक आयाम ही हमारे लिए सबसे शक्तिशाली हथियार है। मध्य पश्चिम विवि सुर्खेत नेपाल के उप कुलपति प्रो.नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है इसलिए दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल के बार्डर से नकली पैसों का आना जाना बंद होना चाहिए। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र है। हमारे पठन-पाठन की सामग्री, साहित्य, हमारी सोच, हमारी जीवन शैली सब एक समान है। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी।

विवि के रक्षा एवं स्वातंत्रिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि भारत नेपाल संबंधों में लुंबिनी से बोध गया तक आता है। नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता को दर्शाता है। महाराणा प्रताप मवि के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने स्वागत करते हुए कहा कि 2014 के बाद भारत बदला है जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। अतिथियों ने भारत नेपाल के अंतर्संबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया। इस अवसर पर आयोजन के संयोजकद्वय डॉ.पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ.सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवन्त गुप्ता, नेपाल से आए विद्वतजन सहित दोनों देशों के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा : अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के पहले दिन के तकनीकी सत्रों में भारत-नेपाल की साझा विरासत और संस्कृति पर विशद चर्चा हुई। एक सत्र में लुंबिनी विवि के डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत और नेपाल के लोग एक- दूसरों के दिलों में बसते हैं। डॉ. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश बुद्ध के पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। एक अन्य सत्र में वाल्मीकि विद्यापीठ काठमांडू नेपाल के भागवत ढकाल ने कहा कि दोनों देशों के व्यवहारिक गतिविधियों को विकसित करने के लिए दोनों देशों के शासनिक व राजनीतिक दलों को एकजुट होकर एक दूसरे का साथ निभाना चाहिए। प्रो. कीर्ति पांडेय ने कहा कि दोनों देश एक दूसरे के निर्भरता का भी निर्धारण करते हैं।

भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों पर त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में उपस्थित अतिथि।

दैनिक जागरण 2
गोरखपुर, 2 मार्च, 2024
www.jagran.com

ने स्वीकृत किया ध

राम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र : कंडेल

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ, भारत और नेपाल के सांस्कृतिक अंतरसंबंधों पर हुआ विस्तृत मंथन

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि उपस्थित प्रबुद्धजन • सौ. कालेज प्रशासन

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत नेपाल एकता के मूल सूत्र हैं। यह कहना है कि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का। यह महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में शुक्रवार को 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में कंडेल ने आगे कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए। अयोध्या में जन्मभूमि पर रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद श्रीरामलला की जन्मभूमि अयोध्या में बने भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के रूप में मनाया गया। भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत व नेपाल के बीच आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है। नेपाल पर गुरु गोरखनाथ के प्रभाव की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रय संबंध हैं। दोनों के सह-अस्तित्व से यह संबंध ऊंचाई को प्राप्त करते हैं। इस पारस्परिक संबंध का आधार हिंदुत्व है। हिंदुत्व का सम्मान करने व हिंदुत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में घनिष्ठता और मधुरता आएगी। उन्होंने राजनीतिक कारणों से एक दूसरे के लिए उग्र न होने की अपील की। सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है इसलिए

भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन तकनीकी सत्रों में भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर विशद चर्चा हुई। एक सत्र में लुंबिनी विश्वविद्यालय के डा. शिवकांत दुबे ने कहा कि भारत और नेपाल के लोग एक-दूसरों के दिलों में बसते हैं। सीआरडीपीजी कालेज गोरखपुर की डा. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। प्रो. कीर्ति पांडेय ने कहा कि दोनों देश एक दूसरे के निर्भरता का भी निर्वहन करते हैं।

दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं। इसके पीछे का कारण दोनों देशों की धर्म, संस्कृति, भाषा व सभ्यता का एक होना है। वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि भारत-नेपाल की सोच और जीवन शैली एक समान है।कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल और प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने भी संबोधित किया। अतिथियों का स्वागत कालेज के प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि 2014 के बाद भारत बदला है, जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। उन्होंने ऐसी गोष्ठी का आयोजन हर वर्ष किए जाने पर बल दिया। इस दौरान भारत नेपाल के अंतरसंबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर डा. पद्मजा सिंह, डा. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डा. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डा. रामवन्त गुप्ता, डा. अमित उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

amarujala.com
अमर उजाला गोरखपुर
गोरखपुर | शनिवार, 2 मार्च 2024
9

श्रीराम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र : कंडेल

एमपीपीजी कॉलेज में भारत-नेपाल के सांस्कृतिक अंतरसंबंधों पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ

अमर उजाला ब्यूरो

एमपी महाविद्यालय जंगल धूसड़ में शुक्रवार को आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करते नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल। इस दौरान प्रो.सुबरन लाल बज्राचार्य, प्रो. भागवत ढकाल, प्रो.नंद बहादी, पुष्पा भुषाल, प्रो.हर्ष सिन्हा आदि मौजूद रहे। संवाद

गोरखपुर। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र हैं।

ये बातें नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहीं। वह शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

पूर्व गृह राज्यमंत्री ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़नी भी पड़े, तो छोड़ देना चाहिए। 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद अयोध्या में श्रीरामलला की भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के रूप में मनाया गया। आज भी बिना पासपोर्ट और वीजा के लोग भारत और नेपाल की सीमाओं को पार करते हैं। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है।

उन्होंने बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हम लोगों की वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुंबिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल के पारस्परिक संबंध का आधार हिंदुत्व है। हिंदुत्व का सम्मान करने और हिंदत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में घनिष्ठता और मधुरता आएगी।

उन्होंने कहा कि भारत-नेपाल के बीच खुली सीमा हमारे मजबूत संबंधों को दर्शाती है। भारत और नेपाल में कई जातीय समूह भी शामिल हैं। राजनीतिक कारणों से एक दूसरे के लिए उग्र होना बंद करना होगा।

विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि राम त्रेता युग के थे, वाल्मीकि भी त्रेता युग के हैं। नेपाल के लोग वाल्मीकि की जन्मस्थली नेपाल ही मानते हैं। हमारे देवता एक हैं, हमारे ग्रंथ हैं। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी। इस पर नेपाल सरकार ने अपने कदम आगे बढ़ाए हैं।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि भारत नेपाल संबंधों में लुंबिनी से बोध गया तक आता है। नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता को दर्शाता है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आगतों का स्वागत करते हुए कहा कि भारत और नेपाल दोनों देशों का मूल एक है। गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ से जो रिश्ता है, उससे हम भाई हुए। 2014 के बाद भारत बदला है, जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने भी विचार रखे। अतिथियों ने भारत नेपाल के अंतरसंबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर डॉ. पद्मजा सिंह, डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवंत गुप्ता, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. हर्षवर्धन, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. नीरज सिंह आदि मौजूद रहे।

तकनीकी सत्रों में हुई भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा

गोरखपुर। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के पहले दिन के तकनीकी सत्रों में भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा हुई। एक सत्र में लुंबिनी विश्वविद्यालय के डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत और नेपाल के लोग एक- दूसरों के दिलों में बसते हैं। हिंदी का जो सम्मान भारत में है, वही नेपाल में है। सीआरडीपीजी कॉलेज गोरखपुर की डॉ. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश बुद्ध के पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। एक अन्य सत्र में वाल्मीकि विद्यापीठ काठमांडू नेपाल के भागवत ढकाल ने कहा कि दोनों देशों के व्यावहारिक गतिविधियों को विकसित करने के लिए दोनों देशों के शासनिक व राजनीतिक दलों को एकजुट होकर एक दूसरे का साथ निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने नेपाल के कई विश्वविद्यालयों से एमओयू साइन किया है जिससे दोनों देशों की शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। संवाद

दैनिक जागरण 4
गोरखपुर, 3 मार्च, 2024
www.jagran.com

सीमा से परे है भारत-नेपाल का सांस्कृतिक संबंध : प्रो. भागवत ढकाल

महाराणा प्रताप महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन, गुरु गोरखनाथ और नेपाल के गहरे संबंध पर विद्वानों ने की चर्चा

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन प्रो. सुधन पौडेल प्रो. राजाराम सुवेदी, प्रो. नवीन बंधु पहाड़ी व अन्य • सौ : कॉलेज

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि भारत और नेपाल भौगोलिक रूप से भले ही सीमाओं में बंटे हैं लेकिन दोनों देश के बीच सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे हैं। दोनों के आध्यात्मिक दर्शन-चिंतन का मूल विश्व शांति और चराचर जगत का कल्याण है। प्रो. ढकाल महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के तकनीकी सत्र को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. ढकाल ने कहा कि भारत में सर्वपूज्य गुरु गोरखनाथ नेपाल के भी आदिगुरु हैं। नेपाल के गोरखा लोगों का 'गोरखा' नाम गुरु गोरखनाथ के नाम से ही संबंध रखता है। मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल के आपसी संबंध बहुत गहरे हैं। लुंबिनी विश्वविद्यालय, नेपाल के सहायक आचार्य डा. शिवकांत दुबे ने कहा कि भारत और नेपाल का संबंध रोटी-बेटी का है। इन संबंधों का मुख्य आधार सनातन धर्म एवं संस्कृति है। इस सत्र की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय की कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. कीर्ति पांडेय ने की। इस सत्र में प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव ने भी विचार रखे।

पारस्परिक सहयोग से और मजबूत होंगे संबंध : कंडेल: विशिष्ट सत्र में विषय विशेषज्ञ नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों राष्ट्रों के संबंध को एक दूसरे के पारस्परिक सहयोग से और मजबूत बनाया जा सकेगा। इसका एक उदाहरण गोरक्षपीठ की भूमिका है जो इस संबंध को मजबूत बनाने में सराहनीय योगदान देती है। नेपाली कांग्रेस की केंद्रीय सदस्य पुष्पा भुषाल ने कहा कि राजनीतिक तंत्र, कूटनीतिक तंत्र, आर्थिक तंत्र दोनों ही राष्ट्रों की लगभग एक समान है। विधायक कोसी प्रदेश (नेपाल) भीम पराजुली ने कहा कि भारत-नेपाल संबंध केवल राजनीतिक नहीं है बल्कि यह दोनों देशों के जनमानस का संबंध है। ग्रामीण विकास अध्ययन दांग, नेपाल के प्राध्यापक डा. शरद शर्मा ने कहा कि युवा शक्ति की भागीदारी से दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यावहारिक संबंधों को मजबूती मिलेगी। नेपाल के प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार कृष्णा अनिरुद्ध गौतम ने आर्थिक संबंधों की भी मजबूती पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने कहा कि भारत-नेपाल संबंधों की उन्नति में बहुआयामी पक्ष की जानकारी आवश्यक है।

भारत-नेपाल का संबंध हवा और पानी का भी : प्रो. पौडेल: एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि भारत और नेपाल का संबंध हवा व पानी का भी है। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने किया।

amarujala.com
गोरखपुर | रविवार, 3 मार्च 2024
8

'सीमाओं से परे हैं भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंध'

महाराणा प्रताप महाविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में बोले प्रो. भागवत

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। भारत और नेपाल भौगोलिक रूप से भले ही सीमाओं में बंटे हैं, लेकिन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे हैं। दोनों के आध्यात्मिक दर्शन-चिंतन का मूल विश्व शांति और चराचर जगत का कल्याण है। भारत में सर्व पूज्य गुरु गोरखनाथ नेपाल के भी आदि गुरु हैं। नेपाल के गोरखा लोगों का 'गोरखा' नाम गुरु गोरखनाथ के नाम से ही संबंध रखता है।

ये बातें वाल्मीकि विद्यापीठ काठमांडो (नेपाल) के प्राचार्य प्रो भागवत ढकाल ने महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए कहीं।

मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल के आपसी संबंध बहुत गहरे हैं। लुंबिनी विश्वविद्यालय, नेपाल के सहायक आचार्य डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत-नेपाल का संबंध रोटी-बेटी का है। इन संबंधों का मुख्य आधार सनातन धर्म एवं संस्कृति है। इस सत्र की अध्यक्षता डीडीयू की कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. कीर्ति पांडेय ने की। डीडीयू के सेवानिवृत प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव ने भी विचार रखे।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में मंचासीन वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडो के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल, प्रो. राजवंत राव, डॉ. पद्मजा सिंह व अन्य। स्रोत: महाविद्यालय

पारस्परिक सहयोग से और मजबूत होंगे संबंध : कंडेल

विशिष्ट सत्र में विषय विशेषज्ञ नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों राष्ट्रों के संबंध को एक दूसरे के पारस्परिक सहयोग से और मजबूत बनाया जा सकेगा। नेपाली कांग्रेस की केंद्रीय सदस्य पुष्पा भुषाल ने कहा कि राजनीतिक तंत्र, कूटनीतिक तंत्र, आर्थिक तंत्र दोनों ही राष्ट्रों की लगभग एक समान है। विधायक कोसी प्रदेश (नेपाल) भीम पराजुली ने कहा कि भारत-नेपाल संबंध केवल राजनीतिक नहीं है बल्कि यह दोनों देशों के जनमानस का संबंध है। ग्रामीण विकास अध्ययन दांग, नेपाल के प्राध्यापक डॉ. शरद शर्मा ने कहा कि युवा शक्ति की भागीदारी से दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यावहारिक संबंधों को मजबूती मिलेगी। नेपाल के प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार कृष्णा अनिरुद्ध गौतम ने आर्थिक संबंधों को भी मजबूती पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए डीडीयू के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने कहा कि भारत-नेपाल संबंधों की उन्नति में बहुआयामी पक्ष की जानकारी आवश्यक है।

भारत-नेपाल का संबंध हवा और पानी का भी

एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि भारत, नेपाल का संबंध हवा व पानी का भी है। विषय विशेषज्ञ नेपाल के प्रतिष्ठित साहित्यकार नवीन बंधु पहाड़ी ने कहा कि दोनों देश पौराणिक काल से एक संस्कृति के पोषक हैं। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडो के सेवानिवृत्त प्रो. राजाराम सुवेदी आदि ने भी विचार रखे। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवंत राव व अन्य ने भारत-नेपाल के मैत्री संबंधों की ऐतिहासिकता पर मंथन किया। एक अन्य सत्र की अध्यक्षता त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडो के प्रो. सुबोध शुक्ला ने की। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का दूसरा दिन

भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे : प्रो. भागवत ढकाल

सेमिनार

गोरखपुर, निज संवाददाता। वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू (नेपाल) के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि भारत और नेपाल भौगोलिक रूप से भले ही सीमाओं में बंटे हैं लेकिन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे हैं। दोनों के आध्यात्मिक दर्शन-चिंतन का मूल विश्व शांति और चराचर जगत का कल्याण है।

प्रो. ढकाल महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसम्बंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन के तकनीकी सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत में सर्वपूज्य गुरु गोरखनाथ नेपाल के भी आदिगुरु हैं। नेपाल के गोरखा लोगों का 'गोरखा' नाम गुरु गोरखनाथ के नाम से ही संबंध रखता है। मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल के आपसी संबंध बहुत गहरे हैं।

एक सत्र की अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवंत राव व अन्य ने भारत-नेपाल के मैत्री संबंधों की ऐतिहासिकता पर मंथन किया। एक अन्य सत्र की अध्यक्षता त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू के प्रो. सुबोध शुक्ला ने की। सभी सत्रों में अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

भारत-नेपाल के संबंधों का आधार सनातन धर्म-संस्कृति : डॉ. शिवाकांत : लुंबिनी विश्वविद्यालय, नेपाल के सहायक आचार्य डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत नेपाल का संबंध रोटी-बेटी का है। इन संबंधों का मुख्य आधार सनातन धर्म एवं संस्कृति है। इस सत्र की अध्यक्षता डीडीयू की कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. कीर्ति पांडेय ने की। डीडीयू के सेवानिवृत प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव ने भी विचार रखे।

एमपीपीजी कालेज जंगल धूसड़ में सेमिनार में प्रो भागवत ढकाल,प्रो राजवन्त राव,डॉ.पद्मजा सिंह व डॉ.विनोद। • हिन्दुस्तान

पारस्परिक सहयोग से और मजबूत होंगे संबंध : कंडेल

विशिष्ट सत्र में विषय विशेषज्ञ नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों राष्ट्रों के संबंध को एक-दूसरे के पारस्परिक सहयोग से और मजबूत बनाया जा सकेगा। इसका एक उदाहरण गोरक्षपीठ की भूमिका है जो इस संबंध को मजबूत बनाने में सराहनीय योगदान देती है। नेपाली कांग्रेस की केंद्रीय सदस्य पुष्पा भुषाल ने कहा कि राजनीतिक तंत्र, कूटनीतिक तंत्र, आर्थिक तंत्र दोनों ही राष्ट्रों की लगभग एक समान है। विधायक कोसी प्रदेश (नेपाल) भीम पराजुली ने कहा कि भारत-नेपाल संबंध केवल राजनीतिक नहीं है बल्कि यह दोनों देशों के जनमानस का संबंध है। ग्रामीण विकास अध्ययन दांग, नेपाल के प्राध्यापक डॉ शरद शर्मा ने कहा कि युवा शक्ति की भागीदारी से दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यावहारिक संबंधों को मजबूती मिलेगी। नेपाल के प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार कृष्णा अनिरुद्ध गौतम ने आर्थिक संबंधों की भी मजबूती पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए डीडीयू के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने कहा कि भारत-नेपाल संबंधों की उन्नति में बहुआयामी पक्ष की जानकारी आवश्यक है।

भारत-नेपाल का संबंध हवा और पानी का भी : प्रो. पौडेल

एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुवन पौडेल ने कहा कि भारत नेपाल का संबंध हवा व पानी का भी है। विषय विशेषज्ञ नेपाल के प्रतिष्ठित साहित्यकार नवीन बंधु पहाड़ी ने कहा कि दोनों देश पौराणिक काल से एक संस्कृति के पोषक हैं। इस सत्र में त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू के सेवानिवृत्ति प्रो. राजाराम सुवेदी आदि ने भी विचार रखे।

दैनिक जागरण 2
गोरखपुर, 4 मार्च, 2024
www.jagran.com

धर्म व अध्यात्म की मजबूत डोर से बंधे हैं भारत व नेपाल

तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार संपन्न, अकादमिक विकास से और मजबूत होंगे भारत-नेपाल के आपसी संबंध : प्रो. टंडन

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा है कि भारत और नेपाल के बीच भाव और भावना का संबंध है। ऐसा संबंध राजनीति और आर्थिकी के संबंधों से कहीं अधिक मजबूत और गहरा होता है। दोनों राष्ट्रों के संस्कार और स्वभाव एकसमान हैं। दोनों धर्म और आध्यात्म की मजबूत डोर से बंधे हुए हैं। प्रो. त्रिपाठी रविवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि भारत नेपाल के लिए बड़े भाई की भूमिका में है तो नेपाल, भारत के लिए कवच के समान है। दोनों देशों के बीच बहुआयामी संबंध है और इसका मूल आधार दोनों की साझी संस्कृति है। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि भारत-नेपाल के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊंचाई देने के लिए युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। इस दिशा में अकादमिक पहल होनी चाहिए। अकादमिक विकास में भारत व नेपाल का आपसी सहयोग मील का पत्थर बन सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय और नेपाल के विश्वविद्यालयों के बीच करार किया गया है। नेपाल के युवा यहां और यहां के युवा नेपाल जाकर दोनों देशों के बीच रिश्ते को और सशक्त बनाएंगे।

संगोष्ठी में वक्ताओं का संबोधन सुनते महाराणा प्रताप पीजी कालेज के प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव व अन्य ● सौ. जोवि

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, गोवि की कुलपति प्रो. पूनम टंडन व अन्य ● सौ. जोवि

समापन सत्र को त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू, नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य डा. सुबोध शुक्ल और गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने भी संबोधित किया। महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के सभी विद्वतजन व प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी से दोनों देशों के सांस्कृतिक आध्यात्मिक संबंधों को नई ऊर्जा मिली है। अतिथियों का स्वागत डा. पद्मजा सिंह और डा. सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

युवाओं के बल पर ठीक रहेंगे भारत-नेपाल के संबंध : नारायण ढकाल

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि विद्यार्थी परिषद, काठमांडू, नेपाल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री नारायण प्रसाद ढकाल ने कहा कि युवाओं के बल पर भारत-नेपाल संबंध ठीक रहेंगे। उन्होंने आह्वान किया कि नेपाल पर भारत के कुछ युवा शोध करें, नेपाली भाषा भी जानें।

श्री ढकाल ने कहा कि नेपाल के लोग चाहते हैं कि भारत शार्क का नेतृत्व करे। विशिष्ट अतिथि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि दोनों देशों के मैत्री संबंधों को मजबूत करने की दिशा में यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार एक नए अध्याय की शुरुआत है।

भारत-नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग को बढ़ाएगा घोषणा पत्र

गोरखपुर। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में दोनों देशों के अकादमिक विशेषज्ञों, राजनेताओं, विभिन्न संस्थानों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने सम्यक विचार विमर्श किया। इस विमर्श से प्राप्त निष्कर्षों को आपसी सहमति से गोरखपुर घोषणा पत्र के रूप में पारित किया गया। सबने इस बात को स्वीकार किया कि गोरखपुर घोषणा पत्र भारत-नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग को बढ़ाने में काफी कारगर होगा। इस घोषणा पत्र में यह तय किया गया कि दोनों देशों के विशिष्ट संबंध को बनाये रखने के लिए दोनों देशों के नागरिकों, बौद्धिकों, राजनेताओं एवं युवाओं को इन सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित करने तथा निरंतर प्रतिष्ठित करते रहना होगा।

अमर उजाला
amarujala.com
गोरखपुर | सोमवार, 4 मार्च 2024
8

भारत-नेपाल के बीच भाव और भावना का संबंध

भारत-नेपाल के सांस्कृतिक अंतरसंबंधों पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का समापन

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। भारत और नेपाल के बीच भाव और भावना का संबंध है। ऐसा संबंध राजनीति और आर्थिकी के संबंधों से कहीं अधिक मजबूत और गहरा होता है। दोनों राष्ट्रों के संस्कार और स्वभाव एक समान हैं। दोनों धार्मिक और आध्यात्मिक दर्शन के मजबूत डोर से बंधे हुए हैं।

ये बातें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहीं। प्रो. त्रिपाठी रविवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित ''भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक'' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि भारत-नेपाल के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊंचाई देने के लिए युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। इस दिशा में अकादमिक पहल होनी चाहिए। अकादमिक विकास में भारत, नेपाल का आपसी सहयोग मील का पत्थर बन सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय और नेपाल के विश्वविद्यालयों के बीच करार किया गया है।

समापन सत्र को त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडो, नेपाल के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. सुबोध शुक्ल और गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्राणिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने भी संबोधित किया। महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के सभी विद्वतजन, प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस सेमिनार से दोनों देशों के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक संबंधों को नई ऊर्जा मिली है। अतिथियों का स्वागत सेमिनार के संयोजकद्वय डॉ. पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन अवसर पर बोलतीं गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन। संवाद

युवाओं के बल पर ठीक रहेंगे भारत-नेपाल के संबंध

समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि प्रोज्ञीक विद्यार्थी परिषद, काठमांडो, नेपाल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री नारायण प्रसाद ढकाल ने कहा कि युवाओं के बल पर भारत-नेपाल संबंध ठीक रहेंगे। उन्होंने आह्वान किया कि नेपाल पर भारत के कुछ युवा शोध करें, नेपाली भाषा भी जानें। श्री ढकाल ने कहा कि नेपाल के लोग चाहते हैं कि भारत सार्क का नेतृत्व करे। विशिष्ट अतिथि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि दोनों देशों के मैत्री संबंधों को मजबूत करने की दिशा में यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार एक नए अध्याय की शुरुआत जैसा है और इसके सुखद परिणाम सामने आएंगे।

भारत-नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग को बढ़ाएगा गोरखपुर घोषणा पत्र

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में दोनों देशों के अकादमिक विशेषज्ञों, राजनेताओं, विभिन्न संस्थानों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने सम्यक विचार विमर्श किया। इस विमर्श से प्राप्त निष्कर्षों को आपसी सहमति से गोरखपुर घोषणा पत्र के रूप में पारित किया गया। सबने इस बात को स्वीकार किया कि गोरखपुर घोषणा पत्र भारत-नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग को बढ़ाने में काफी कारगर होगा। इस घोषणा पत्र में दोनों देशों के अकादमिक विशेषज्ञों, राजनेताओं, विभिन्न संस्थानों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने इस बात पर पूर्ण सहमति जताई कि भारत-नेपाल संबंधों के मूल दोनों देशों के मध्य सदियों पुराने धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध हैं। यह तय किया गया कि दोनों देशों के नागरिकों, बौद्धिकों, राजनेताओं एवं युवाओं को इन सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित करने और निरंतर प्रतिष्ठित करते रहने का कार्य करते रहना होगा। संवाद

हिन्दुस्तान
गोरखपुर
सोमवार
4 मार्च 2024
05

एमपी पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का समापन

भारत-नेपाल के बीच भाव व भावना का संबंध : प्रो. श्रीप्रकाश मणि

सेमिनार

गोरखपुर, निज संवाददाता। भारत और नेपाल के बीच भाव और भावना का संबंध है। ऐसा संबंध राजनीति और आर्थिकी के संबंधों से कहीं अधिक मजबूत और गहरा होता है। दोनों राष्ट्रों के संस्कार और स्वभाव एक समान हैं। दोनों धार्मिक व आध्यात्मिक दर्शन के मजबूत डोर से बंधे हुए हैं।

ये बातें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहीं। वे रविवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसम्बंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार में प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि भारत नेपाल के लिए बड़े भाई की भूमिका में है तो नेपाल, भारत के लिए कवच के समान है। दोनों अपनी इन भूमिकाओं को बखूबी समझते हैं और निर्वहन भी करते हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल के शालिग्राम को भारत पूजता ही रहेगा। भगवान श्रीराम और शिवावतार गुरु गोरखनाथ भारत और नेपाल में एक जैसे पूज्य हैं। दोनों देशों के बीच बहुआयामी संबंध है और इसका मूल आधार दोनों की साझी संस्कृति है।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि भारत-नेपाल के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊंचाई देने के लिए युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। इस दिशा में अकादमिक पहल होनी चाहिए। अकादमिक विकास में भारत-नेपाल का आपसी सहयोग मील का पत्थर बन सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए डीडीयू और नेपाल के विश्वविद्यालयों के बीच करार किया गया है। नेपाल के युवा यहां और यहां के युवा नेपाल जाकर दोनों देशों के बीच रिश्ते को और सशक्त बनाएंगे।

एमपी पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस सेमिनार से दोनों देशों के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक संबंधों को नई ऊर्जा मिली है। दोनों देश इस सिलसिले को निरंतर आगे बढ़ाते रहेंगे। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू के संस्कृत विभाग के डॉ. सुबोध शुक्ल और डीडीयू के रक्षा एवं स्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने भी संबोधित किया। सेमिनार का प्रतिवेदन डीडीयू में राजनीतिशास्त्र विभाग के डॉ. अमित कुमार उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। स्वागत डॉ. पद्मजा सिंह व डॉ. सुबोध मिश्र ने किया।

एमपीपीजी कालेज जंगल धूसड़ में संगोष्ठी में कुलपति प्रो. पूनम टंडन, प्रो. सीपीएम त्रिपाठी व अन्य। • हिन्दुस्तान

- अकादमिक विकास से मजबूत होंगे भारत-नेपाल के सम्बंध : प्रो. टंडन
- सांस्कृतिक-आध्यात्मिक संबंधों को नई ऊर्जा मिली : डॉ. प्रदीप राव

युवाओं के बल पर ठीक रहेंगे भारत-नेपाल के संबंध : ढकाल

विशिष्ट अतिथि प्राज्ञीक विद्यार्थी परिषद, काठमांडू के राष्ट्रीय संगठन मंत्री नारायण प्रसाद ढकाल ने कहा कि युवाओं के बल पर भारत-नेपाल संबंध ठीक रहेंगे। उन्होने आह्वान किया कि नेपाल पर भारत के कुछ युवा शोध करें, नेपाली भाषा भी जानें। विशिष्ट अतिथि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि इस सेमिनार के सुखद परिणाम सामने आएंगे।

मैत्री व सहयोग को बढ़ाएगा 'गोरखपुर घोषणा पत्र'

गोरखपुर। अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में दोनों देशों के अकादमिक विशेषज्ञों, राजनेताओं, विभिन्न संस्थानों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने सम्यक विचार विमर्श किया। इस विमर्श से प्राप्त निष्कर्षों को आपसी सहमति से गोरखपुर घोषणा पत्र के रूप में पारित किया गया। सबने स्वीकार किया कि गोरखपुर घोषणा पत्र भारत-नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग को बढ़ाने में काफी कारगर होगा। घोषणा पत्र में सभी वक्ताओं ने सहमति जताई कि भारत-नेपाल संबंधों के मूल दोनों देशों के मध्य सदियों पुराने धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध हैं। यह संकल्प भी लिया गया कि अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उभयदेशीय प्रतिभागी भविष्य में दोनो देशों के संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए नियमित रूप से प्रस्ताव एवं कार्य योजनाएं तैयार कर दोनों देशों के नीति निर्धारकों के समक्ष 'जनाकांक्षाओं के प्रस्ताव' के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

amarujala.com
गोरखपुर | बुधवार, 20 मार्च 2024
7

शोध व्याख्यान प्रतियोगिता में मारुति ज्योति और राहुल अव्वल

गोरखपुर। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में मंगलवार को इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों में शोध दृष्टि उत्पन्न करने एवं अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बीए द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया, जिसमें प्रथम स्थान पर मारुति नंदन मिश्रा, द्वितीय स्थान पर ज्योति प्रजापति और तृतीय स्थान पर राहुल कुमार रहे। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. दीपशिखा नागवंशी व दीप्ति गुप्ता रहीं। कुल 13 विद्यार्थियों ने शोध व्याख्यान प्रस्तुत किए। कार्यक्रम संयोजक अनूप कुमार पांडेय ने कहा कि इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों में स्वस्थ शैक्षिक प्रतियोगिता का भाव निर्मित करती है। शोध को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ऐसी प्रतियोगिताएं प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में होनी ही चाहिए। संवाद

दैनिक जागरण 2
गोरखपुर, 20 मार्च, 2024

शोध व्याख्यान प्रतियोगिता में मारुति अव्वल

गोरखपुर : महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में मंगलवार को इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों में शोध दृष्टि उत्पन्न करने एवं अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बीए द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इसमें प्रथम स्थान पर मारुति नंदन मिश्रा, द्वितीय स्थान पर ज्योति प्रजापति और तृतीय स्थान पर राहुल कुमार रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डा. सुधा शुक्ला, डा. दीपशिखा नागवंशी व दीप्ति गुप्ता रहीं। कुल 13 विद्यार्थियों ने अपने शोध व्याख्यान प्रस्तुत किये। संयोजक अनूप पाण्डेय ने कहा कि इस प्रकार की स्वस्थ एवं बौद्धिक प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों में स्वस्थ शैक्षिक प्रतियोगिता का भाव निर्मित करती है। (विज्ञप्ति)

हि हिन्दुस्तान
गोरखपुर, शनिवार, 23 मार्च 2024
04

महाराणा प्रताप कॉलेज में लगी रक्षा प्रदर्शनी

गोरखपुर। महाराणा प्रताप कॉलेज जंगल धूसड़ के रक्षा एवं स्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा शुक्रवार को 'रक्षा प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि दिग्विजय नाथ पीजी कालेज के रक्षा एवं स्रातजिक अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शुभांशु शेखर सिंह ने ऐसी प्रदर्शनी विद्यार्थियों को रक्षा सेनाओं और उसके हथियारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करती है।

हि हिन्दुस्तान
गोरखपुर, बुधवार, 20 मार्च 2024
05

शोध व्याख्यान में मारुति प्रथम, ज्योति द्वितीय

गोरखपुर। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में मंगलवार को इतिहास विभाग द्वारा शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें मारुति नंदन मिश्र प्रथम, ज्योति प्रजापति द्वितीय और राहुल कुमार तृतीय रहे। निर्णायक मण्डल में डॉ. सुधा शुक्ला, डॉ. दीपशिखा नागवंशी व दीप्ति गुप्ता शामिल रहीं।

भारतीय नभमण्डल के धार्मिक-आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षितिज के दैदीप्यमान नक्षत्र युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज नें पूर्वांचल के शैक्षणिक विकास एवं भारतीय संस्कृति, परम्परा, सनातन ज्ञान-विज्ञान एवं कौशल से ओत-प्रोत शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से सन् 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की थी। सिद्ध गोरक्षपीठ एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित महाराणा प्रताप महाविद्यालय पूर्वांचल के शिक्षा क्षेत्र की एक अग्रणी संस्था है । महाविद्यालय के मासिक गतिविधियों का एक संक्षिप्त संकलन ''ध्येय पथ'' नाम से मासिक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसी क्रम में मार्च माह की मासिक ई-पात्रिका ध्येय-पथ आप सभी के अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़ गोरखपुर